# ऑनलाइन पढ़ाई

सुरभि चावला*

पिछले से भी पिछले साल पहले
कितनी उजली-सी
सुनहरी धुपहली-सी थी ये दुनिया
पुरानी रजाई के खोल से बना मेरा
सुंदर-सा फूलदार बस्ता
और, उस बस्ते में कॉपी और किताबइयाँ
और कुछ इमली के दाने, छीलनी और मिटोनी
मेरा अपना खजाना!
अपने इस खजाने संग चना-चबैना खायके
पड़ोस की सहेलियों संग
कभी फुररम-फुर्र तो कभी देर सबेर स्कूल
पहुँच ही लेती थीं हम।
किस्से-कहानी-कविता-खेल-पढ़ाई
हम सब सहेलियों के जी को भाई
मैडम सुनाती थीं किस्से कहानियाँ
उन किस्सों से हम करते थे अठखेलियाँ।
पर हमारी अठखेलियाँ किसी को न सुहाई,
एक अनजानी अनदेखी सी आफत आई
जानते हैं कौन-सी आफत? अरे! वही कोरोना
स्कूल हो गए बंद, किस्से कहानी सब भंग।

**शोधार्थी*, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली

फूल, पत्तियों, घास-फूस, सूरज, चाँद, सितारे
सभी से कहती—
ऐ रे, तनिक इस कोरोना को भगाओ न!
कोरोना तो न गया पर स्कूल ऑनलाइन हो गया।
हम खुश, सहेलियाँ खुश और अपना बस्ता भी खुश
पर...?
एक था फोन, अब कैसे हो बटवारा भाई,
कैसे होती ऑनलाइन पढ़ाई?
भइया की कक्षा, मेरी कक्षा का समय एक ही था
फोन पर अधिकार पहले भइया का था
तो कैसे होती ऑनलाइन पढ़ाई?
ऐ कोरोना! अब जा रे!
स्कूल के आड़े मत आ रे!
बड़ी मुश्किलों से तो जाने की इजाजत मिली थी।
हमारी सुनहरी धुपहली दुनिया लौटा रे।